अनिरुद्ध सिन्हा

फ़िक्र सौ-सौ हों मगर प्यार का रिश्ता रखिए
घर की उल्टी हुई तस्वीर को सीधा रखिए

इन अंधेरों से दिया रोज़ लड़ा करता है
कम से कम आप हवाओं पे तो पहरा रखिए

दिलरुबा लफ्ज़ सभी ओर बिखर जाएंगे
शर्त इतनी है कि माहौल को अच्छा रखिए

दर्द की धूप में जलते हैं बदन लोगों के
छाँव आए तो खुला सामने रस्ता रखिए

पेंच कोई भी लड़ाए वो कटेगा एक दिन
इन पतंगों की उड़ानों पे भरोसा रखिए

विनय मिश्र

और कुछ थी और कुछ माना गया
कब तुझे ऐ ज़िन्दगी समझा गया

एक सच के नाम पर अपना समय
झूठ कितने रंग के बरसा गया

जब भी दिल का हाल पूछा आपने
दौड़कर आँखों में पानी आ गया

कोई उत्तर हाथ भी आया नहीं
सोचने में वक्त भी कितना गया

बस ज़रा आराम की खातिर यहाँ
जाने कितनी बार घर बदला गया

है बिछी गहरी उदासी रेत की
एक सूरज कितने दरिया खा गया

कौन है जो सीढ़ियों की बात कर
एक छत का रास्ता पकड़ा गया

ISSN:2583-8849